Sub- Political Science
T.D.C Part I

प्रश्न -5 सत्याग्रह की गाँधीवादी अवधारणा का मूल्यांकन करें।

उत्तर- महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को मूर्त रूप देने के लिए राजनीतिक क्षेत्र में जिस कार्य पद्धति का प्रयोग किया है, वह सत्याग्रह है। व्यक्ति और समाज को नैतिक बनाने के दृष्टिकोण से महात्मा गाँधी ने सत्य, अहिंसा और उचित्र एवं न्यायपूर्ण साधन आदि का प्रयोग किया है।

इसके नाम और मौलिक सिद्धान्तों का विकास दक्षिण अफ्रीका में किया गया। वहाँ की गोरी सरकार भारतीयों के प्रति अन्याय-पूर्ण कानून पारित कर रही थी। उस अन्याय-पूर्ण कानून से वहाँ बसे भारतीयों में तीव्र असंतोष और रोष था। उन्होंने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में इस अन्याय का अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का दृढ़ संकल्प किया।

सत्याग्रह का आधारभूत सिद्धान्त सत्य की ही जीत होती है। सत्य पर चलनेवाला कभी झूठ नहीं बोलता तथा धोखे और चालों का प्रयोग भी नहीं करता। एक सत्याग्रही

अपनी गतिविधियों को छिपाने का प्रयत्न नहीं करता और अपनी त्रुटियों को भी स्वीकार करने को हमेशा तैयार रहता है। सत्य का यह सिद्धान्त जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू होता है। सत्य और अहिंसा ही सत्याग्रह के दो मूलभूत सिद्धान्त है।

(i) सत्याग्रह एक नया विज्ञान है, जो कर्मयोग तथा व्यवहारिक दर्शन पर जोर देता है।

(ii) सत्याग्रह अध्यात्मिक तरीका है, जिसमें अपने अत्याचारियों के विरुद्ध कोई द्वेष-भाव न रखते हुए अपनी अंतरात्मा की आवाज का अनुसरण किया जाता है और किसी भी परिस्थिति में सत्य के प्रतिपादन से पीछे नहीं हटा जाता।

(iii) महात्मा गांधी ने यह उद्घोषणा किया कि प्रेम और सत्य के बल पर तथा अहिंसा का अस्त्र धारण कर एक सत्याग्रही विरोधी को अपने पक्ष में कर लेता है। सत्याग्रह का उद्देश्य विरोध का अंत करना है न कि विरोधियों का। इसके सामने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श रहता है।

(iv) सत्याग्रह का प्रयोग करने से पूर्वविरोधी की अनुमति की आवश्यकता नहीं होती।

सत्याग्रही के संग्राम में मृत्यु मोक्ष होती है और कारागार स्वतंत्रता का द्वार।

सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग बड़ी सावधानी और बुद्धिमत्ता के साथ उस समय करना चाहिए, जब शांतिपूर्ण रीति से अन्याय का प्रतिकार करने के अन्य साधनों का प्रयोग विफल हो जाया है। अन्याय को दूर करने के लिए पहले प्रार्थना करनी चाहिए। उन्हें तथा जनता को शांतिपूर्ण युक्तियों द्वारा अपने पक्ष का समर्थन करना चाहिए। इस विषय में आम जनता में अनुकूल मत जागृति करने का प्रयास करना चाहिए। इन उपायों के विफल होने पर तथा जनमत तैयार करने के बाद ही सत्याग्रह आरंभ करना चाहिए। सत्याग्रह का काम विरोधी को हराना या नीचा दिखाना नहीं है, वरन उसका हृदय परिवर्तन करके उसे अपने अनुकूल बनाना है। सत्याग्रही के स्वेच्छापूर्वक कष्ट सहने से तथा अपनी बात पर दृढ़तापूर्वक डटे रहने से ही विरोधी का हृदय द्रवित होता है।

उन्होंने कहा है— "सत्याग्रह में अपनी ही बलि देनी होती है।" सत्याग्रही अधिकारियों द्वारा किए गए दंडों को अंगीकार करता है, इनसे बचने के लिए भागने या

छिपने का प्रयत्न नहीं करता। उसके लिए यह भी आवश्यक है कि वह अधिकारियों का विरोध सीमित मात्रा में करे, दूसे अन्याय-पूर्ण कानूनों के विरोध तक ही सीमित रखे, क्योंकि इसे व्यापक बनाने से समाज में अराजकता बढ़ने की संभावना है।

सत्याग्रह की प्रविधियाँ

गाँधीजी ने सत्याग्रह की विभिन्न प्रविधियों के सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला है। —

1. असहयोग — महात्मा गाँधी का कहना था कि अत्याचार और शोषण लोगों के सहयोग के चलते उत्पन्न होते हैं। अतः यदि सभी लोग अन्यायपूर्ण तरकों का असहयोग करें तो शीघ्र ही अन्याय की समाप्ति हो सकती है। असहयोग के अनेक तरीके हैं जैसे - हड़ताल, सामाजिक बहिष्कार और धरणा। हड़ताल अंतर्गत विरोध के रूप में सत्याग्रही कार्य को बंद कर देते हैं। सामाजिक बहिष्कार समाज के कलंकी लोगों का बहिष्कार है, जो जनमत की अवहेलना करते हैं और सहयोग नहीं करते।

2. सविनय अवज्ञा — गाँधीजी ने कहा कि सविनय अवज्ञा सबसे अधिक सशस्त्र क्रांति का रक्तहीन रूप है। इसका उद्देश्य अनैतिक नियमों को तोड़ना है। इसके अंतर्गत अधिकारी की आज्ञा की अवहेलना की जाती है, लेकिन इसके पीछे घृणा और शत्रुता की भावना नहीं रहना चाहिए।

3. उपवास — महात्मा गाँधी के विचार में उपवास सत्याग्रह का अभिषाण है। सार्वजनिक जीवन की शुद्धि के लिए उपवास एक आवश्यक शर्त है, लेकिन उपवास के लिए बहुत उच्च कोटि की पवित्रता, नम्रता और अटल विश्वास की आवश्यकता है।

4. हिजरत - इसका अर्थ है - स्थायी निवास स्थान से दूसरी जगह चला जाना। गाँधीजी इस तरह गृह-त्याग की सलाह इनलोगों को दी है जो अत्यंत दुख अनुभव करते हैं और एक स्थान पर आत्मसम्मान के साथ नहीं रह सकते। गाँधीजी ने बारडोली, जूनागढ़ के सत्याग्रहियों को गृह त्याग की सलाह दी थी।

5. हड़ताल — गाँधीजी ने कहा कि हड़ताल अपने वैध कष्टों को दूर करने का

श्रमिकों के अधिकार में एक शास्त्र है, जो हड़ताल के माध्यम से समाज में परिवर्तन चाहते हैं। लेकिन, गांधीजी का आदर्श है कि सत्याग्रहियों की हड़ताल भावना और व्यवहार में पूर्णतः अहिंसात्मक होनी चाहिए। हड़ताल के माध्यम से सत्याग्रही अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है।

सत्याग्रह के विभिन्न रूप

महात्मा गाँधी ने भारत के राजनीतिक आंदोलनों में सत्याग्रह का निम्नलिखित रूपों में प्रयोग किया है—

1. असहयोग (Non-co-operation)
2. सविनय अवज्ञा (Civil disobedience)
3. व्यक्तिगत सत्याग्रह (Individual Satyagraha)

1920 ई० में महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गये आंदोलन को असहयोग का नाम दिया गया, जिसके अन्तर्गत भारतीयों द्वारा ब्रिटिश सरकार की नौकरियों, अदालतों, स्कूलों तथा कॉलेजों का बहिष्कार करना था। 1930-31 ई० में गांधीजी का दूसरा आंदोलन सविनय अवज्ञा का था। अब ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस के प्रस्ताव

के अनुसार भारत को पूर्ण स्वराज्य देना स्वीकार नहीं किया तब महात्मा गाँधी ने अन्यायपूर्ण कानूनों की अवहेलना करने के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया। 1940-41 ई० में अंगरेजों द्वारा भारत को द्वितीय विश्व-युद्ध में घसीटने के बाद महात्मा गांधी ने ब्रिटिश सरकार के विरोध में व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ किया और स्वर्गीय विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही बनाया गया।

मूल्यांकन -

गाँधीजी के सत्याग्रह विषयक विचारों में पवित्रता तथा नैतिकता के भावना के बावजूद आलोचकों ने इसकी काफी आलोचनाएँ की हैं। उनका कहना है कि महात्मा गांधी का सत्याग्रह भ्रामक सिद्धांतों पर आधारित है। सत्याग्रह में निहित उपवास, हड़ताल, असहयोग आदि की भावनाएँ समाज में संघर्ष उत्पन्न कर सकती हैं, क्योंकि एक भूखा व्यक्ति साधनों की पवित्रता का ख्याल नहीं कर सकता।

अतः गाँधीजी ने अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक क्रांति का आह्वान किया है। आलोच गारत में गांधीजी के सत्याग्रह के प्रयोग की विफलताओं की आलोचना करते हैं और कहते हैं कि गाँधीजी ने 1920 ई० में असहयोग आंदोलन से एक ही वर्ष में स्वराज्य दिलाने का आश्वासन भारतीयों को दिया था, जो पुरा नहीं हुआ। ब्रिटिश सरकार ने 1920-22 ई० का असहयोग आन्दोलन, 1930-32 ई० के सविनय अवज्ञा आंदोलन, तथा 1942 ई० के भारत छोड़ो आंदोलन को बुरी तरह दबा दिया।

आलचकों के उपर्युक्त तर्कों में चाहे जितना भी दम हो, गाँधीजी का सत्याग्रह एक ऐसा महान ~~अस्त्र~~ अस्त्र था, जिसने अँगरेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश कर दिया।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि आज के दिन में भी भारतीय राजनीति में और भारतीय सरकारी कर्मचारी एवं श्रमिकों के लिए हड़ताल, अवज्ञा, उपवास आदि अपने सरकार और अधिकारी के लिए एक अस्त्र का काम कर रहा है।